प्रातः क्लास 19-3-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। शिवभगवानुवाचः बाप समझाते हैं मनुष्य को कब भीभगवान नहीं कहा जाता। भल बहुत मनुष्यों का नाम भी शिव रखा हुआ है परन्तु भगवान नहीं कह सकेंगे। यह भी जानते है शिव भगवान है। शिव के मंदिर में जाते हैं, समझते हैं यह भगवान है। ऊंच ते ऊंच पहले है शिव भगवान का मंदिर, पीछे है देवताओं के मंदिर। बाकी तुम्हारे मंदिर नहीं हैं। न ब्रहमा का न ब्रहमाकुमार-कुमारियों का मंदिर है। ब्रहमाकुमारियां जानती है कि हम अभीदेवता बन रहे हैं। हम बनते हैं चैतन्य-शिवालय के। और पीछे फिर जड़-शिवालय के मंदिर बनेंगे। इस समय भारत को शिवालय नहीं कहेंगे। इनको कहा जाता है वेश्यालय रावण राज्य है ना। रावण सम्प्रदाय है। अथवा इसको आसुरी सम्प्रदाय भी कहे। कल अखबार में भी एक फोटो दिखाया था ओरीजनल आदमी। वास्तव में यह इस समय के मनुष्य हैं। सिकल तो मनुष्य की है परन्तु सीरत बन्दर मिशल है। अर्थात बुधि किसकी बन्दर मिशल, किसकी हाथी मिशल किसकी गधे मिशल, किसकी बैल मिशल है। क्योंकि सभी जनावर बुधि हैं ना। तो इसमें भी जनावर का बुधि दे दिया है। यह है ही कांटों का जंगल। एक दो को कांटा हीलगाते हैं। काम कटारी का कांटा लगता है ना। काम कटारी का कांटा लगाना यह तो जंगली जनावरों का ही काम है। एक दो को दुःख देते हैं ना। इसलिए फिर पुकारते हैं बाबा आओ इस जंगल से हमको बगीचे में ले चलो। जब यह देवी-देवतायें थे तो गार्डेन था ना। वह कभीकांटा नहीं लगाते थे। यह 5 विकारों रूपी रावण होता नहीं। यहां ही रावण सम्प्रदाय है। जनावर है। बाप आत्माओं के लिए समझाते हैं। बात भी आत्माओं से करते हैं। आत्मा सुनती है शरीर द्वारा हर बात। परन्तु शरीर का अभिमान होने कारण कांटा कहा जाता है। रावण राज्य में सभी मनुष्य देह-अभिमानी बन जाते हैं। क्रिमनल आई हो जाती है। ऐसे नहीं समझना चाहिए कोई वायसलेस है। भल ब्रहमचारी है, वह भी सदैव के लिए तो नहीं है। फिर भी क्रिमनल आई हो जाती है। बाप कहते हैं तुम्हारी सिविल आईज़ होनी चाहिए। आत्मा को जब ज्ञान मिलता है तो उनकी आंखें खुल जाती है। तुम्हारी अभी आंखें खुल गई है। अर्थात ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। तुम समझते हो हम आत्मा हैं न कि शरीर। आत्मायें हम परमात्मा के बच्चे हैं। आपस में ब्रदर्स हैं। कहते भी हैं ब्रदरहुड। फादरहुड का कब नाम नहीं सुना होगा। बाबा ने समझाया है जब कोई भी आवे तो पहले उन से पूछो तुम्हारे बाप कितने हैं? पहले दो बाप का परिचय मिल जाये। तीसरा बाप का राज़ बाद में समझाया जाता। क्योंकि यह है बहुत गुह्य बात। यह सिर्फ पुरुषोत्तम संगम युग पर ही समझाया जाता है। एक है लौकिक, दूसरा है पारलौकिक। यह तो कामन बात है। उनको सिर्फ पिता कहा जाता है। उनको (पारलौकिक) कहा जाता है परमपिता। सुप्रीम दोनो बाप को जानते हैं परन्तु रावण-राज्य मेंदेहाभिमानी होने कारण देह के बाप से ही प्रीत रखते हैं। फिर दुःख मेंकहते हैं हे परमात्मा रहम करो। बच्चों को समझाया है भारत स्वर्ग था जब कि इन देवताओं का राज्य था। भारत को ही स्वर्ग कहा जाता है। और कोई देश को स्वर्ग नहीं कहा जाता। बाबा ने प्रश्न भी लिखवाई थी अपने से पूछो हम स्वर्गवासी है या नर्कवासी हैं? यह भारत के लिए ही है। इसलिए लिखना होता है हे भारतवासियों बताओ नर्कवासी हो या स्वर्गवासी? क्रिश्चन वा मुसलमान से नहीं पूछ सकते हैं। यह है ही भारतवासियों के लिए। भारतवासी ही पतितदुनिया और पावन दुनिया को जानते हैं तब तो पुकारते हैं हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ। लिबरेट करो। गाईड बनो। बाप गाईड बनते ही हैं सिर्फ शान्तिधाम के लिए। सुखधाम के लिए गाईड नहीं बनते हैं। वहां तो खुद जाते ही नहीं। सुखधाम में तुमको जाना है। अभी तुम फिर से स्वर्गवासी बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। सन्यासी लोग तो कब स्वर्ग का नाम भी नहीं सुनेंगे। इसलिए बाप पूछते ही भारतवासियों से हैं। उस लिखत में शायद भारतवासी अक्षर नहीं है। कैक्शन की जाती है ना। दिन प्रति दिन कैक्ट होते जाते हैं। यह नालेज है ही भारतवासियों के लिए। भारतवासी ही पहले नम्बर में स्वर्ग के फूल थे। क्रिश्चन वा मुसलमान को फूल नहीं कहा जाता। वह उस गार्डन के फूल

नहीं हैं। वह तो आते ही हैं बाद में। वेराईटी धर्म भी तो जरूर चाहिए ना। यह जो विराटरूप बनाया है यह भी भारतवासीयों के लिए है। विराट संसार नहीं। वेराईटी तुम्हारी होती है। किसम2 के मनुष्य हैं। कोई कैसे कोई कैसे। तो यह विराट रूप भी तुम्हारे लिए है। तुम समझ सकते हो बरोबर हम ही 84 जन्म लेते हैं। वह भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मैक्सीमम और मिनीमम होते हैं। सारे कल्प में तुम 84 जन्म लेते हो। तो आधा कल्प के बाद बाकीकितने जन्म लेंगे यहहिसाब निकालना होता है। यह नालेज है ही भारतवासियों के लिए। उन्हों को ही तुम समझाते हो। और बाकी उठावेंगे नहीं। उन्हों के लिए तो सिर्फ एक ही बात है। बोलो तुम मूलवतन में पावन आत्मा थे। अभी बाप कहते हैं पावन बनो। कोई भी धर्म वाला होगा कहेगा लिबरेट करो। क्योंकि रावण राज्य है ना। सभीको लिबरेट करते हैं। वह शान्तिधाम और तुम सुखधाम में चले जाते हो। बाप आकर सभी को ले जाते हैं। पहले2 आकर भारतवासियों को ही हेविन बनाते हैं। बाकी सभी शान्तिधाम में चले जाते हैं। हेविनली गाड, फादर भी तुम कह सकते हो। औरों का कहना रांग है। इन बातों को सयाणे समझ अच्छी रीत समझ सकते हैं। पहले2 भारत ही हेवनि प्रे पैराडाईज़ था। अभी तो नर्क पुरानी दुनिया है। कैपिटल होती है ना जहां राजा-रानी रहते हैं। तो भारत भी कैपीटल था। जब कि इन ल०ना० का राज्य था। नवयुग में ही भारत नव होता है। यह तो सभी जानते हैं हम आते ही पीछे हैं। नई दुनिया में तो हम आते ही नहीं। नई दुनिया में देवी-देवतायें ही थे। तुम्हारे लिए बाप समझाते हैं तुम नवयुग के थे। अभी पुराने बन पड़े हो। फिर इस पुरुषोत्तम संगम युग पर पुरुषार्थ करनेसे ही तुम नवयुग के बनेंगे। पुरुषोत्तम होते हो हें देवी-देवतायें। सब से उत्तम गुणवान देवतायें ही हैं। वह तो अभी है नहीं। तुम ही देवता थे। फिर 84 जन्म लगाये कोई बन्दर कोई क्या बन पड़े हैं। मनुष्यों ने सुना है जनावर ब्र जैसे मनुष्य थे तो जनावरों का ही चित्र बना दिया है। यह नहीं लिखा है कि अभीके मनुष्य जनावरों मिशल हैं। इस ज्ञान को तो बिलकुल ही जानते नहीं। ऐसे ही सिर्फ लिख दिया है। जनावर जैसे मनुष्य थे। अनसुधरेली, अनार्य थे। पहले तुम भी अनसुधरेली थे। बन्दर बुधि थे। जनावरबुधि घोड़े-गदहे बुधि थे। बुधि शरीर में तो नहीं हैं ना। आत्मा मन-बुधि सहित है। बाकी यह तो आरगन्स है। आगे तुम्हारी पत्थर बुधि थी। गदहे बुधि थे। मनुष्य जैसे कि जनावर बन जाते हैं। बाबा ने समझाया है कोसपर कहा जाता है। तुम कसाई बन जाते हो। बाव ने कल भी समझाया है कि गदहे पर बोझा रखा जाता है ना। तो तुम्हारे सिर पर अने जन्मों का विकर्म का बोझा है। जो बाप के सिवाय कोई उतार न सके। धोबी लोग भी मैले कपड़े साफ करने जाते हैं ना। बाप भी आकर धोबी बनते हैं। तुम बच्चों को लक्ष्य देते हैं कि मामेकं याद करो तो तुम पवित्र बन जावेंगे। कपड़े भी साफ हो जाते हैं ना। तुमको भी बाप सावंरासे गोरा बना देते हैं। सतयुग में यथा राजा-रानी तथा प्रजा गोरे थे। वही फिर 84 जन्म लेते सांवरा बने हैं। इसलिए पहले2 तो मुख्य कृष्ण के लिए कहते हैं। क्योंकि वह नम्बरवन है ना। इसलिए उनका नाम रख दिया है श्याम-सुन्दर। पहले2 सुन्दर थे अभी श्याम बने हैं। तो उनका चित्र भी ऐसा बना देते हैं। उनका चित्र श्याम क्यों बनाते हैं यह भी किसकोपता नहीं। काम-चिक्षा पर बैठ एकदम काले हो जाते हैं। फिर अभी तुम ज्ञान-चिक्षा पर बैठ गोरा बन जावेंगे। तुम जिस सुख में रहते हो तो और धर्म होते ही नहीं। तो तुम आये ही हो बेहद के बाप से राज्य लेने के लिए। जानते हो बाप की शिवजयन्ति मनाई जाती है। जरूर भारत में ही आते हैं। स्वर्ग की सौगात ले आते हैं। तुम भी जानते हो बाबा आया हुआ है। उनको कहा ही जाता है परम-पिता। यह भीमनुष्य नहीं जानते। तुम कहेंगे शिव बाबा आया हुआ है। यह तो है ब्रह्मा। यह अपन को शिव वा भगवान नहीं कहलाते। बाप ने समझाया है मैं इनके बहुत जन्मों के भी अन्त के जन्ममें में इन में प्रवेश करता हूं। तुम कुछ भीपूछते नहीं हो। बाबा आपे ही समझाते हैं। तुम क्या पूछेंगे। तुम्हारी तो पत्थर बुधि थी ना। आपे ही खुद बतलाते हैं। तुम बच्चे अपने जन्मों को नहीं जानते हो। अभी तुम बच्चों की बुधि में है हम ने ही 84 जन्म लिये हैं। अभी फिर रिटर्न जर्नी करनी है।

पार्ट बजाकर पूरा किया फिर रिपीट करना है। तुमकितना दूर से आये हो पार्ट बजाने। फिर वापस जाना पड़ेगा। तो जब कोई पहले2 आते हैं तो समझाना चाहिए परमपिता एक ही है। यह तो सभी मानते हैं। शास्त्रों में भी लिखा हुआ है प्रजापिता ब्रह्मा। वह दोनो तो नामी-ग्रामी है। प्रजापिता ब्रह्मा अभी तुमको मिलता है। जो तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियां कहलाते हो। उन से कोई वर्सा नहीं मिलता है। वर्सा मिलता ही है दो एक हद का दूसरा बेहद का। हद के वर्से तो जन्म-जन्मान्तर लेते आये हो। बेहद का वर्सा एक ही बार मिलता है। कृष्ण का है फिर यह बहुत जन्मों के अन्त का जन्म। इसलिए तुम इनके चित्र में भी 84 जन्मों की कहानी लिखते हो। मनुष्य तो इन बातों को मानेंगे नहीं। कृष्ण के शरीर मे तो भगवान आते भी नहीं है। कहते हैं बहुत जन्मों के भी अन्त के जन्म में जब काम चिक्षा पर बैठ पतित बन जाते हैं तब मैं प्रवेश करता हूं। एक बैठते हैं तो सभी बैठ जाते हैं। एक ही बाप बैठसभी को पावन बनाते हैं। एक पावन बननेसे सभी पावन बन जाते हैं। जिसके पिछाड़ी सारा झुण्ड जाता है। अभीबाप कहते हैं वापस जाना है। मुझे बुलाया ही है कि आकर पावन होने की युक्ति बताओ। बाप तो अपने टाईम पर आते हैं। उसमें फर्क नहीं पड़ सकता। यह ड्रामा बड़ा एक्युरेट है। एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। संगम युग का भी खुद बतलाते हैं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। जब कि हम आकर तुमको ऐसा उत्तम पुरुष बनाता हूं। उत्तम कहा जाता है श्रेष्ठ को। श्री श्रेष्ठ को कहा जाता है। शिव बाबा है श्री श्री। देवताओं को कहेंगे श्री। भारत में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ कहेंगे देवतायें। ल0ना0 स्वर्ग के मालिक थे ना। यथ राजा-रानी तथा प्रजा। नम्बरवार होते हैं ना। तुम भीपुरुषार्थ अनुसार स्वर्ग के मालिक बनते हो। भारत की बहुत महिमा करते हैं। धरणी की महिमा नहीं है। धरणी कोई माता नहीं है। यह सभी मातायें हैं ना। अभी तुम जान गये हो हम देवी-देवतायें युगल पवित्र प्रवृति मार्ग के थे। फिर पुनर्जन्म लेते2 रावण राज्य में पतित बन गये हैं। जो असल देवी-देवता धर्म के थे वह कनवर्ट हो और 2 धर्मों में चले गये हैं। देवता धर्म के है ही नहीं। नाम बदली कर दिया है। फाउन्डेशन प्रायः लोग हो गया है। (बड़ के झाड़ का मिशाल) यह दृष्टान्त बाप ही देते हैं। सन्यासी यह दृष्टान्त दे न सकेंगे। अभी बाप बतलाते हैं तुम असल देवी-देवताधर्म के हो। परन्तु पतित होनेकारण अपन को देवी-देवता नहीं कहला सकते हो। वास्तव में हो देवतायें। अभी एक धर्म की स्थापना और धर्म का विनाश हो जावेगा। तुम जब थे तो दूसरा धर्म नहीं था। यह भी तुम अभी जानते हो। आधा कल्प हमारा राज्य चलता है। फिर नीचे उतरते हैं। इस समय ही बाप आकर याद की यात्रा अथवा जिसको योग की यात्रा कहें वह सिखलाते हैं। जिस से तुम पवित्र आत्मा बन वापस जाते हो। विनाश भी जरूर होना है। बाप आते ही है संगम युग पर। और कोई इन बातों को नहीं जानते हैं। नये2 तो इन नालेज को समझ भी न सके। उन्हों को तो सिर्फ रावण राज्य की ही नालेज है। रामराज्य की नालेज वाला यहां कोई हो नहीं सकता। बुलाते भी हैं बाबा आओ आकर पावन बनाओ तो जरूर नालेज देंगे ना। यह भी विवेक कहते हैं प्रलय होती नहीं। तुम नवयुग में होंगे तो और बाकी धर्म शान्तिधाम में होंगे। यह पुरानी दुनिया होगी ही नहीं। तुम यह बन जावेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। विनाश भी जरूर होना है। तुम बच्चों के लिए नई प्रकृति भी जरूर चाहिए। अभी तो सारी सृष्टि तमोप्रधान पति हो गई है। कुछ भी आनन्दनी है नहीं। यहां के फल-फूल आदि में कोई रस नहीं है। यह जैसे कि जनावरों के लिए हैं। स्वाद कुछ नहीं है। वहां सतयुग में तुम नई धरणी, सब कुछ नया सतोप्रधान मिलेगा। नई और पुरानी चीज़ का फर्क तो जरूर रहता है ना। वहां बहुत वैभव होते हैं। अनाज़ भी नहीं मिलता। मनुष्य जनावरमिशल हो गये हैं। तो अनाज़ भी ऐसा मिलता है। बाप कहते हैं लायक ही ऐसे चीज़ के हैं। जनावर बुधि हैं ना। अभी दुःख का अन्त होना है। फिर सुख ही सुख होगा। बहुत वैभव मिलेंगा। तुम विष्णु के परिवार के बनते हो। यहां के विष्णु वल्लभाचारी भी कसाई हैं। तुम कह सकते हो सभी कसाई हैं क्योंकि काम कटारी चलाते हैं ना। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है इनको

जीतने से तुम सच्चा वैष्णव बन सकते हो। काम कटारी बन्द करने से ही विष्णु बनना है। तुम तो पूरे कसाई हो। पहले तुम विष्णु कुल के थे। अभी हो रावण कुल के। विष्णु कुल की अभी फिर से बाप स्थापना करते हैं। इस यज्ञ में विघ्न भी पड़ते हैं। अत्याचार होते हैं क्योंकि तुम पवित्र बनते हो। शादी नहीं करते हैं तो उनको घर से निकाल देते हैं। कहते हैं कसाई बनो तो हमारे कुल में रहो। नहीं तो निकल जाओ। यह किसको पता नहीं है कि यह तो वैष्णव कुल, विष्णुपुरी की स्थापना हो रही है। इसमें समझने की बड़ी विशाल बुधि चाहिए। सभी एक रस तो नहीं पढ़ेंगे। पढ़ाई नहीं, योग नहीं है तो फिर वह खुशी भी नहीं रहती। पढ़ाई योग होगा तो अति ईन्द्रिय सुख भी होगा। आत्मा का अति ईन्द्रिय सुख बाहर में भी शो करता है। बाकी कृष्ण के कोई गोप-गोपियां थे। उनकी तो दास-दासियां हो सकती है। दास-दासियां और सम्बन्धी होंगे। गोपी बल्लभ के सिर्फ गोप-गोपियां तुम हो। स्वर्ग में गोप-गोपियां नहीं कहेंगे। इस समय तुम पढ़ का फरिश्ते बन जाते हो। तुम सा० भी फरिश्तों का करते हो। तो परफेक्ट हैं। उस समय तुम फाईनल फरिश्ते बन जावेंगे। जब लड़ाई होगी। इसलिए कहा जाता है भिखा भोत मलुका शिकार। यह तो कांटों का जंगल है। इनको विनाश की आग लगती है। जंगली जनावर विनाश हो जाते हैं बाकी तुम फिर अमरपुरी में जावेंगे। तुम काल पर जी पा लेते हो। तुम्हारे में ज्ञान है। खुशी से तुम शरीर छोड़ेंगे। 84 जन्म पूरे हुये अभी जाना है बाबा के पास। अनेक बार हमने यह 84 का चक्र लगाया है। 3/4 सुख का, बाकी 1/4 है दुःख। इस खेल में सुख जास्ती है। दुःख और सुख बराबर हो तो फिर तो शोभा ही न रहे। दुःख तब होता जब तुम तमोप्रधान बनते हो। सतोप्रधान हो तो बहुत सुख है। बाप कहते हैं तुम तमोप्रधान बन जाते हो तो फिर मैं तुमको आकर सतोप्रधान बना कर ले जाता हूं। अभी तुम बाप को जान कर आस्तिक बन गये हो। अभी तुम्हारे पास ज्ञान है। फिर इस ज्ञान की दरकार नहीं रहेगी। न किसको देना है। तुम अभी नालेजफुल बनते हो। फिर वहां दरकार नहीं रहेगी। भूल जाते हो। जैसे मनुष्य शरीर छोड़ते हैं तो पास्ट की बातें भूल जाते हैं ना। अभी तुम बच्चे समझते हो पहले हम आसुरी बुधी थे। अभी ईश्वरीय बुधि बने हैं। फिर देवता बनेंगे तो यह बुधि नहीं होगी। इस समय ईश्वर बुधि देते हैं। बाप कहते हैं मेरे में जो सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है वह मैं तुम बच्चों को देता हूं। यह धारणा भी तब होगा अगर तुम आत्माभिमानी होंगे। बाप को भूलने से और देह का अभिमान होने से जो विकर्म होगा वह भी सौगा हो जावेगा। इसलिए गायन है सदगुरु का निन्दक ठौर न पावे। सब आबजेक्ट सामने खड़ी है। अगर न पढ़ा तो निन्दा कराई तो पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। वह गुरु लोग फिर अपने दुकानदारी निकाल बैठे हैं। ढेर के ढेर गुरु हैं। स्त्री का पति भी गुरु है। फिर दोनों ही सन्यासियों को अपना गुरु करते हैं। जो है ही निवृति मार्ग के। वह ऊंच बनाने का ज्ञान तो दे न सके। ताकत ही नहीं। वह है हठयोगी। जंगल में ले जावेंगे। एक है हद का सन्यास दूसरा है बेहद का सन्यास। उन में अल्प काल का सुख। पतित दुनिया है ना। इन में सुख कहां से आया। इसमें अन्तर्मुखता बहुत2 चाहिए। घड़ी2 अपने को आत्मा समझ बाप को याद करे तो विकर्म विनाश हो। इसलिए पढ़ाई पर अटेन्शन देना चाहिए। पढ़ते2 माया से हार खा लेते हैं। काम का हूंसा लगने से एक दम चटखाते में हो जाते हैं। इसलिए बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। इनको जीतने से जगतजीत बनेंगे। तुम ही थे फिर तुमको ही बनने का है। सभी तो ज्ञान नहीं लेंगे। बाप भी गुप्त है तुम्हारी पढ़ाई भी गुप्त है। किसको पता है नहीं कि तुम विश्व के मालिक बनने वाले हो। यह तुम ही जानते हो। चलते-फिरते बाप को याद करते हम पावन एवर निरोगी बन जाते हैं। इसलिए बाबा ने समझाया है हेल्थ डिपार्टमेन्ट को समझाओ। एक को समझाया तो क्या करेंगे। एक ने समझा परमिशन दी फिर दूसरा कोई निकला न समझा तो परमिशन नहीं देंगे। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रित रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

-: : ओमशान्ति। : :-